लोकहितं मम करणीयम्

[प्रस्तुत पाठ आधुनिक संस्कृत कवि श्रीधर भास्कर वर्णेकर रचित सरल संस्कृत गीत है जिसमें नवयुवकों को जीवनपयोगी कार्य करने का उपदेश है। यह संस्कृतगीत गेय, सरल और प्रेरणाप्रद है। डॉ॰ वर्णेकर नागपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष थे। इन्होंने अनेक संस्कृत रचनाएँ की हैं जिनमें शिवाजी के जीवनचरित पर 68 सर्गों का महाकाव्य "शिवराज्योदयम्" अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसकी अन्य प्रसिद्ध रचना "संस्कृत वाङ्मय कोष" है जो हिन्दी में चार खण्डों में प्रकाशित है। इन्होंने बालोपयोगी बहुत सी संस्कृत कविताएँ लिखी हैं।]

मनसा सततं स्मरणीयम्,

वचसा सततं वदनीयम्,

लोकहितं मम करणीयम्॥ लोकहितम् ..... ॥

न भोगभवने रमणीयम्,

न च सुखशयने शयनीयम्।

अहर्निशं जागरणीयम्,
लोकहितं मम करणीयम् ।। मनसा ..... ।।
न जातु दुःखं गणनीयम्,
न च निजसौख्यं मननीयम् ।
कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्,
लोकहितं मम करणीयम् ।। मनसा ..... ।।
दुःखसागरे तरणीयम्,
कष्टपर्वते चरणीयम् ।
विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्,
लोकहितं मम करणीयम् ।। मनसा ..... ।।
गहनारण्ये घनान्धकारे,
बन्धुजना ये स्थिता गह्वरे ।
तत्र मया संचरणीयम्,
लोकहितं मम करणीयम् ।। मनसा ..... ।।

शब्दार्थाः –

मनसा	=	मन से
सततम्	=	लगातार
वचसा	=	वचन से
लोकहितम्	=	संसार की भलाई
अहर्निशम्	=	रात-दिन
जागरणीयम्	=	जगा रहना चाहिए
भोगभवने	=	भोग-विलास के भवन में
मननीयम्	=	विचार करना चाहिए
निजसौख्यम्	=	अपने सुखों का
कार्यक्षेत्रे	=	कार्य क्षेत्र में
बन्धुजनाः	=	अपने लोग
स्थिताः	=	अवस्थित हैं
कष्टपर्वते	=	कष्टों के पहाड़ पर
विपत्तिविपिने	=	संकट रूप वन में
गह्वरे	=	गुफा में
गहनारण्ये	=	घने जंगल में
स्मरणीयम्	=	याद करना चाहिए
गणनीयम्	=	गिनना चाहिए
त्वरणीयम्	=	शीघ्रता करनी चाहिए

तरणीयम् = तैरना चाहिए

घनान्धकारे = घने अन्धकार में

संचरणीयम् = भ्रमण करना चाहिए

रमणीयम् = रम जाना चाहिए

सन्धिविच्छेद: –

गहनारण्ये = गहन + अरण्ये।

घनान्धकारे = घन + अन्धकारे।

प्रकृति-प्रत्यय-विभाग: –

स्थिता: = √स्था + क्त

स्मरणीयम् = √स्मृ + अनीयर्

वदनीयम् = √वद् + अनीयर्

रमणीयम् = √रम् + अनीयर्

शयनीयम् = √शी + अनीयर्

जागरणीयम् = √जागृ + अनीयर्

करणीयम् = √कृ + अनीयर्

गणनीयम् = √गण् + अनीयर्

मननीयम् = √मन् + अनीयर्

त्वरणीयम् = √त्वर् + अनीयर्

तरणीयम् = √तॄ + अनीयर्

चरणीयम् = √चर् + अनीयर्

भ्रमणीयम् = √भ्रम् + अनीयर्

संचरणीयम् = सम् + √चर् + अनीयर्

अभ्यासः

(मौखिकः)

1. **निम्नलिखितानाम् अव्ययानाम् अर्थं वदत–**

   च, अपि, एकत्र, तत्र, जातु, कथम्

2. **अस्य पाठस्य काश्चन चतस्रः पङ्क्तीः सस्वरं श्रावयत।**

3. **अधोलिखितानां शब्दानाम् अर्थं वदत–**

   सौख्यम्, मनसा, मननीयम्, त्वरणीयम्, गह्वरे।

4. **अधोलिखितेषु पदेषु मूलधातुं वदत–**

   स्थिताः, गणनीयम्, जागरणीयम्, वदनीयम्, शयनीयम्

(लिखितः)

1. **एकपदेन उत्तरत–**

   (क) कार्यक्षेत्रे किं करणीयम्?

   (ख) अहर्निशं किं करणीयम्?

   (ग) कुत्र भ्रमणीयम्?

   (घ) बन्धुजनाः कुत्र स्थिताः?

   (ङ) वचसा किं करणीयम्?

2. पाठानुसारेण सत्यम् (√) असत्यं वा (×) निर्दिशत –

(क) लोकहितं मम करणीयम्। ( )

(ख) सुखशयने शयनीयम्। ( )

(ग) अहर्निशं जागरणीयम्। ( )

(घ) न जातु दु:खं मननीयम्। ( )

(ङ) न च निजसौख्यं गणनीयम्। ( )

(च) तत्र मया न संचरणीयम्। ( )

3. 'अ' स्तम्भस्य वाक्यानि 'आ' स्तम्भस्य वाक्यै: सह मेलयत–

'अ'	'आ'
(क) न भोगभवने	(i) संचरणीयम्।
(ख) न च सुखशयने	(ii) तरणीयम्।
(ग) तत्र मया	(iii) रमणीयम्।
(घ) कार्यक्षेत्रे	(iv) चरणीयम्।
(ङ) कष्टपर्वते	(v) शयनीयम्।
(च) दु:खसागरे	(vi) त्वरणीयम्।

4. रिक्तस्थानानि उचितै: शब्दै: पूरयत –

(क) तत्र मया ..... ।

(ख) ..... तरणीयम्।

(ग) वचसा ..... वदनीयम्।

(घ) ..... दु:खं गणनीयम्।

(ङ) लोकहितं..... करणीयम्।

योग्यताविस्तारः

आधुनिक संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत पिछले डेढ़ सौ वर्षों में सहस्राधिक छोटी-बड़ी संस्कृत रचनाएँ होती रही हैं। जिनमें महाकाव्य, नाटक तथा उपन्यास आदि बड़ी रचनाएँ एवं गजल (गज़्जलिका), गीत, लघु कविता आदि छोटी रचनाएँ भी हैं। छोटी रचनाओं के अनेक संकलन प्रकाशित हैं। एक आधुनिक संस्कृत समीक्षक ने बीसवीं शताब्दी को संस्कृत साहित्य का स्वर्णयुग कहा है क्योंकि जितनी रचनाएँ इस काल में लिखित और प्रकाशित हुई हैं किसी अन्य युग को यह सौभाग्य नहीं मिला। संस्कृत रचनाकार लोकजीवन के सभी पक्षों के प्रति जागरूक रहे हैं चाहे वह पर्यावरण हो, किसानों का सुख-दुःख हो, मनोरञ्जन हो, राजनीति हो या अन्य कोई भी ज्ञातव्य बात हो। आधुनिक वैज्ञानिक युग में प्रकाशन की सुविधा तथा पत्र-पत्रिकाओं के सामयिक प्रकाशन की व्यवस्था होने से साहित्य का उत्पादन भी पर्याप्त रूप से हुआ है।

उपर्युक्त पाठ में जहाँ लोकहित के प्रति तरुणों को प्रवृत्त करने का सन्देश कवि ने उत्तम पुरुष का प्रयोग करते हुए दिया है वहीं अन्य कवियों ने भी ऐसे नैतिक उपदेश लोकजीवन एवं राष्ट्रीय अस्मिता की दृष्टि से दिए हैं। कुछ कवि प्रकृतिवर्णन में पर्यावरण की पवित्रता पर अपनी दृष्टि डालते हैं। जैसे–

प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा नो भवन्तु पिष्टः।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान्न समाविष्टा॥

प्रस्तुत पाठ की विशिष्टता – इस पाठ की संदेशात्मक महत्ता तो है ही, इसमें जो विभिन्न धातुओं से "अनीयर्" प्रत्यय का प्रयोग इतना विपुल हुआ है कि व्याकरण का पाठ जैसा लगता है। स्मरणीयम् (स्मृ धातु), वदनीयम् (वद्), करणीयम् (कृ), रमणीयम् (रम्), शयनीयम् (शी), जागरणीयम् (जागृ), गणनीयम् (गण्), मननीयम् (मन्), त्वरणीयम् (त्वर्) इत्यादि प्रयोग छात्रोपयोगी हैं।

अव्ययों का परिचय – संस्कृत भाषा में सदा एकरूप रहने वाले शब्द को अव्यय कहते

हैं। "व्यय" का अर्थ विकार या परिवर्तन है। जिस शब्द में लिंग, वचन, पुरुष इत्या के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, वह अव्यय है। इसका लक्षण दिया गया है–

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥
व्येति = वि + एति = विकृतं भवति।

जो तीनों लिंगों में समान रूप का हो, सभी विभक्तियों में भी समान ही रहे, सभ वचनों में एकरूप रहे, विकृत न हो वह अव्यय कहलाता है। अव्यय के मुख्यतः तीन भेद व्युत्पत्ति की दृष्टि से हैं–

1. मूल अव्यय – जैसे–च (और), अद्य (इसके बाद), अद्य (आज), अन्तः (भीतर) अधः (नीचे), अलम् (पर्याप्त, व्यर्थ), इह (यहाँ), एव (ही), एवम् (इस प्रकार), नक्तम् (रात में), दिवा (दिन में), पुरा (प्राचीन काल में), वृथा (बेकार), बहिः (बाहर) इत्यादि।

2. प्रत्ययान्त अव्यय – कृत् या तद्धित प्रत्यय लगाने से भी अव्यय बनते हैं। कृत् प्रत्ययान्त अव्यय क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् आदि प्रत्ययों से बनते हैं। जैसे गत्वा, आदाय, पठितुम् इत्यादि। तद्धित प्रत्ययान्त अव्ययों के उदाहरण हैं–इतः (यहाँ से), अतः (इसलिए), कुतः (कहाँ से, क्यों), यतः (जहाँ से, क्योंकि), स्वतः (अपने आप), अत्र (यहाँ), तत्र (वहाँ), कुत्र (कहाँ) एकत्र (एक जगह), इत्थम् (इस प्रकार), कथम् (किस प्रकार), यदा (जब), कदा (कब), कदाचित् (किसी समय) इत्यादि।

3. अव्ययीभाव समास – ये भी अव्यय होते हैं। जैसे–यथाशक्ति, प्रतिदिनम्, अनुगङ्गम्, (गंगा के किनारे-किनारे) इत्यादि।

प्रस्तुत पाठ में कई प्रकार के अव्ययों का प्रयोग है। जैसे–सततम् = निरन्तरम् (लगातार), जातु = कदाचित् (कभी भी), तत्र = वहाँ। न और च भी अव्यय हैं।

◆◆◆